



THE
MENTORING
PROJECT

आत्मिक युद्धः कानूनी लड़ाई में परमेश्वर की बुद्धि कैसे पाएँ



AUTHOR: DR. RICHARD PERHAI
EDITOR: DR. LARRY OATS

धन और सम्बन्ध: आर्थिक विश्वासघात के बाद बाइबल आधारित शान्ति पाना



लेखक: DR. RICHARD PERHAI

(डॉ. रिचर्ड परहाई)

सम्पादक: DR. LARRY OATS

(डॉ. लैरी ओट्स)

विषय-सूची

परिचय.....	4
मन की गाँठ का विश्लेषण	8
खरबों रुपए का ऋण	12
दया और मूर्खता के बीच का अन्तर	16
मनमुटाव दूर करने के व्यावहारिक कदम.....	20
निर्मल आत्मा का धन	24
निष्कर्ष: जब धन की हानि हो जाए तब परमेश्वर पर अपने पालनहार के रूप में भरोसा रखना.....	27



परिचय

मैंने इसी दृश्य को बार-बार घटित होते हुए देखा है, इतनी बार कि अब गिनना भी कठिन हो गया है। यह प्रायः सहायता करने की एक सच्ची इच्छा से आरम्भ होता है। मैं गैरी नामक एक व्यक्ति को जानता था, जो एक अच्छा और भरोसेमन्द व्यक्ति था, जिसने कड़ा परिश्रम किया और थोड़ी बचत भी कर रखी थी। उसके साले पीट का सपना था कि वह उद्यान-सज्जा का व्यवसाय आरम्भ करे। उसके पास दूरदृष्टि और कठोर परिश्रम करने की इच्छा तो थी, परन्तु उसके पास पूँजी नहीं थी। इसलिए गैरी ने वही किया जो उसके विचार में एक अच्छा मसीही परिवार के पुरुष को करना चाहिए था: उसने पीट को पन्द्रह हजार डॉलर (लगभग चौदह लाख रुपये) उधार दे दिए। न कोई ब्याज, न कोई औपचारिक अनुबन्ध, केवल हाथ मिलाया और कहा—कि “जब तुम्हारे पास हो, तब मुझे लौटा देना।”

छः महीने के भीतर ही वह व्यवसाय बन्द हो गया। कुछ घाटे वाले अनुबन्ध और एक खराब हो चुके ट्रक ने उस पन्द्रह हजार डॉलर को डूबा देने के लिए पर्याप्त काम किया। और तभी से उनमें बातचीत बंद हो गई। पीट ने फ़ोन करना बन्द कर दिया। उसने रविवार के दिन दोपहर के भोजन पर आना भी छोड़ दिया। धन्यवाद-दिवस तक आते-आते गैरी के सामने एक कुर्सी खाली पड़ी रहती थी। पीट उस व्यक्ति का सामना करने में बहुत लज्जित था, जिसका वह ऋणी था, और गैरी इतना क्रोधित था कि पहल करके उस दूरी को मिटा नहीं सका। वह खाली कुर्सी केवल किसी व्यक्ति की अनुपस्थिति का प्रतीक नहीं थी; वह टूटी हुई प्रतिज्ञा और उस ऋण का स्मारक बन गई थी, जो अब दोनों के बीच एक दीवार बन चुकी थी।

गैरी ने बाद में मुझे बताया कि अब उसे उस धन की कोई चिन्ता नहीं है। वह अपने मित्र को वापस पाने के लिए तीस हजार डॉलर भी दे देता। परन्तु ऋण और उससे उत्पन्न आर्थिक तनाव ने अपना ही एक जीवन धारण कर लिया था। वह बैंक खाते से निकलकर भोजन-कक्ष की मेज तक आ पहुँचा था और अब सबके जीवन से शान्ति और आनन्द को धीरे-धीरे छीन रहा था।

जब आप अपने निकट सम्बन्धियों में से किसी व्यक्ति—किसी मित्र, भाई या चचेरे भाई—को पैसा उधार देते हैं, तो आपको लगता है कि आप केवल एक आर्थिक लेन-देन कर रहे हैं। परन्तु ऐसा नहीं है। आप

एक ऐसी परछाई को उत्पन्न कर रहे होते हैं, जो आप दोनों के साथ उन प्रत्येक स्थानों तक जाती है, जहाँ आप साथ-साथ होते हैं। मैं इसे बकाए धन की परछाई कहता हूँ।

यह वह असहज क्षण होता है जब किसी जन्मदिन की पार्टी में आप देखते हैं कि वे किसी और के लिए उपहार खरीद रहे हैं, और तब आपके मन में आता है कि उनके पास उसके लिए पैसे हैं, पर मेरे लिए नहीं हैं? यह उस समय दिखाई देता है जब आपके कमरे में प्रवेश करने पर वे अपनी दृष्टि भूमि की ओर झुका लेते हैं। मिलो के बीच का ऋण सम्बन्धों की शक्ति-सन्तुलन को बदल देता है। यह बराबरी के सम्बन्ध को स्वामी और सेवक के सम्बन्ध में बदल देता है। नीतिवचन 22:7 कहता है कि उधार लेने वाला उधार देने वाले का दास होता है। जब हम बाइबल में ऋणों को देखते हैं, तो प्रायः हम इसे बैंकों और व्याज-दरों के सन्दर्भ में समझते हैं, परन्तु यह बात घर के बैठक-कक्ष में भी उतनी ही सत्य है।

बकाया धन की परछाई ईमानदारी को असम्भव बना देती है। जब ऋण का विषय सामने आता है, तो आप केवल “गैरी और पीट” नहीं रह जाते। अब आप “वह व्यक्ति बन जाते हैं जो ऋणी है” और “वह व्यक्ति जिसका पैसा लिया गया है।” देनदारी वह दृष्टिकोण बन जाता है जिसके द्वारा आप हर व्यवहार को देखने लगते हैं। यह ऋण देने वाले को सन्देह पूर्ण बना देता है और ऋण लेने वाले को अपनी सफाई देने की स्थिति में ला देता है। और सबसे बुरी बात यह है कि आप दोनों में से कोई भी इसके विषय में बात नहीं करना चाहता है, इसलिए वह परछाई और भी बड़ी और अधिक कठोर होती चली जाती है, जब तक कि अन्ततः वह किसी एक व्यक्ति को उस स्थान से बाहर जाने के लिए विवश नहीं कर देती।

कड़वाहट की गणना

मैं ऐसे पुरुषों के साथ बैठा हूँ जिन्होंने अपने जीवन के कई वर्ष आर्थिक समस्याओं से जूझते हुए बिताए हैं और जिसे मैं कड़वाहट की गणना कहता हूँ, वे ऐसा करते रहे हैं। वे रात में जागते रहते हैं, छत को देखते हुए यह गणना करते रहते हैं कि उनसे वास्तव में क्या “छीन लिया गया” है। वे केवल मूलधन की गिनती नहीं करते; वरन् वे छूटे हुए अवसरों, खोई हुई नींद और उस कथित अनादर को भी गिनते रहते हैं जो उस आर्थिक विश्वासघात के कारण उन्हें सहना पड़ा, वे इस प्रयास में अपने मन में बार-बार गणना करते रहते हैं, कि आर्थिक कड़वाहट के तराजू को बराबर करने का कोई उपाय मिल सके।

परन्तु इस प्रकार की गणना के विषय में बात यह है कि यह आत्मा को सड़ा देती है। कड़वाहट एक बार-बार दोहराई जाने वाली गणना है। जितना अधिक आप अपनी हानि की गणना करते हैं, उतना ही अधिक आप खोते चले जाते हैं। आप अपनी शान्ति खो देते हैं, अपने परिवार के साथ वर्तमान में रहने की योग्यता को खो देते हैं, और साथ ही अपना आनन्द भी खो देते हैं। बाइबल में क्षमा के विषय में देखते हुए, इब्रानियों 12:15 हमें चेतावनी देता है कि हम इस बात का ध्यान रखें कि कोई “कड़वाहट की जड़” न फूट निकले, जो कष्ट उत्पन्न करे और बहुतों को अशुद्ध कर दे। कड़वाहट केवल एक व्यक्तिगत भावना नहीं है; वरन् यह एक विषय है जो आपके सभी अन्य सम्बन्धों में फैल जाता है।

जब आप कड़वाहट की गणना करने में फँसे रहते हैं, तब वास्तव में आप स्वयं ही अपना न्यायी और न्यायपीठ बनने का प्रयास कर रहे होते हैं। आप संसार को अपनी शर्तों के अनुसार न्यायपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहे होते हैं। परन्तु जितना अधिक आप यह माँग करते हैं कि दूसरा व्यक्ति अपने किए हुए का मूल्य चुकाए, उतना ही आपको यह समझ में आने लगता है कि वास्तव में आप धन की खोज में नहीं हैं। आप तो अपने पक्ष की पुष्टि चाहते हैं। आप चाहते हैं कि उन्हें अपने किए का बोझ महसूस हो। परन्तु प्रायः वे पहले से ही उस बोझ को महसूस कर रहे होते हैं। वे भी उतने ही इस गणना में फँसे हुए होते हैं जितने आप फँसे होते हैं। अन्तर केवल इतना है कि वे अपनी लज्जा की गणना कर रहे होते हैं, जबकि आप अपने क्रोध की गणना कर रहे होते हैं।

सुसमाचार का दृष्टिकोण

आप संभवतः यह सोच रहे होंगे कि एक पास्टर आपके बटुए या आपके साले के असफल व्यवसाय के विषय में इतना अधिक समय क्यों दे रहा है। इसका कारण यह है कि यीशु ने स्वर्ग और नरक के विषय में जितना कहा, उससे भी अधिक धन, सम्बन्धों, विरासत और व्यवसाय जैसे विषयों के विषय में शिक्षा दी है। यीशु के एक-चौथाई से अधिक दृष्टान्त धन और सम्बन्धों, विरासत और व्यवसाय से सम्बन्धित हैं। और यीशु ने हमारे खजाने और हमारे हृदय के बीच के सम्बन्ध को बहुत स्पष्ट रूप से बताया है। मत्ती 6:21 में वह कहता है, क्योंकि जहाँ तेरा धन है, वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।

परन्तु यह बात दूसरी ओर से भी उतनी ही सत्य है। जहाँ आपकी हानि हुई होती है, वहीं आपका मन लगा रहता है। यदि आपका मन पन्द्रह हजार डॉलर के गट्टे में दबा हुआ है, तो आप मसीह के पीछे चलने के लिए स्वतन्त्र नहीं हैं। आप उस ऋण से बँधे हुए हैं। आप ऐसे जी रहे हैं मानो आपकी सुरक्षा और आपका मूल्य इस बात पर निर्भर करता हो कि पीट कभी आपका पैसा लौटाएगा या नहीं।

यह मार्गदर्शिका आपका पैसा वापस पाने के विषय में नहीं है। यह उससे कहीं अधिक मूल्यवान बात के विषय में है: यह क्षमा करना सीखने और अपने प्राण को फिर से पाने के विषय में है। यह इस बात को सीखने के विषय में है कि क्रूस के दृष्टिकोण से अपनी हानि को कैसे देखें, ताकि क्षमा के विषय में बाइबल-आधारित समझ प्राप्त हो सके। हम ऐसे उद्धारकर्ता की सेवा करते हैं जिसने सबसे बड़ी हानि स्वयं उठाई, ताकि हमें सबसे बड़ी विरासत प्राप्त हो सके। यदि हम उसके अनुयायी होने का दावा करते हैं जिसने हमारा अनन्त ऋण चुका दिया है, तो हमें बाइबल में ऋण-क्षमा के विषय में बात करनी होगी और यह भी समझना होगा कि अपने आसपास के लोगों के सीमित ऋणों के साथ कैसे व्यवहार करें।

अब हम इस विषय की गहराई में उतरेंगे अर्थात् ऐसे संसार में, जहाँ लोग असफल हो जाते हैं, जब व्यवसाय बन्द हो जाते हैं, और भाई एक-दूसरे को निराश कर देते हैं, वहाँ प्रबन्ध के बाइबल-आधारित सिद्धान्तों को कैसे लागू किया जाए। हम ऋण से कैसे निपटें, बोनो और काटने के सिद्धान्त का एक सरल ईश्वर विज्ञान सम्बन्धी आधार क्या है, और क्यों कभी-कभी आपके आत्मिक स्वास्थ्य के लिए सबसे उत्तम बात यह होती

है कि आप ऋण को क्षमा करना सीखें, उधारी की पर्ची को उठाएँ और उसे जला दें। यह आसान नहीं होगा, और उस समय यह आपको निश्चित रूप से “न्यायसंगत” भी नहीं लगेगा। परन्तु उस छोटी सी आग के दूसरी ओर ऐसी शान्ति है, जिसे कोई भी बैक खाता कभी नहीं दे सकता। आइए, यही से आरम्भ करते हैं।

1

मन की गाँठ का विश्लेषण

मैं उस ठंडे बोझ को जानता हूँ, जो यह एहसास होते ही आपकी छाती पर आ बैठता है कि पैसा हाथ से निकल चुका है। यह केवल बैंक खाते में लिखे अंकों की बात नहीं है; परन्तु यह विश्वासघात का अनुभव है। आपने किसी पर भरोसा किया था। उन्होंने सहायता माँगी और आपसे एक प्रतिज्ञा की। इसलिए आपने सहायता करने के लिए अपना हाथ खोला, परन्तु उन्होंने अपने हाथ को बन्द कर लिए ताकि उसे अपने पास रख सकें। चाहे वह कोई ऐसा व्यापारिक समझौता रहा हो जो असफल हो गया, और जिसके कारण आप यह पूछने लगे कि कैसे उधार देने के विषय में बाइबल क्या कहती है, या फिर किसी मित्र को दिया गया वह “ऋण” था जो ऐसे उपहार में बदल गया जिसे आप कभी देना ही नहीं चाहते थे, आरम्भिक आघात धीरे-धीरे किसी और भारी चीज़ में बदल जाता है—अर्थात् मन की गाँठ में बदल जाता है।

हम कहते हैं कि हमने किसी के प्रति मन में गाँठ बाँध ली है, मानो यह कुछ ऐसा है जो हम उस व्यक्ति के साथ कर रहे हैं; परन्तु वास्तविकता यह है कि वह मन की गाँठ हमें बाँधे हुए है। यह केवल मन की बात नहीं है; परन्तु इसका शारीरिक प्रभाव भी होता है। जब बातचीत में उनका नाम आता है, तो आप इसे अपने कन्धों पर महसूस करते हैं। जब आप सोशल मीडिया पर उनकी छुट्टी की यात्रा या नई गाड़ी का चित्र देखते हैं, तो आपके भीतर यह कड़वाहट होने लगती है कि इस व्यक्ति पर मेरा पैसा बकाया है, जबकि मेरी उधारी की पर्ची अब भी धूल फाँक रही है। हम स्वयं से कहते हैं कि हम केवल न्याय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, परन्तु यदि हम ईमानदारी से देखें, तो वास्तव में हम प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा करके अपनी शान्ति को नष्ट कर रहे हैं।

जब कोई हमारा उधार पैसा नहीं लौटाता, तो हम न्याय की लालसा क्यों करते हैं

न्याय की लालसा हमारे भीतर एक गहरे, मूलभूत भाग से निकलती है। हमें ऐसा लगता है कि यदि हम केवल उस ऋण को छोड़ दें—यदि हम वास्तव में उसे क्षमा कर दें और उसकी माँग करना बन्द कर दें—तो “बुरा व्यक्ति” जीत जाएगा। हमें ऐसा महसूस होता है कि हम उसे उसके किए से बच निकलने दे रहे हैं। हमारे भीतर का “न्यायाधीश” न्यायासन पर खड़ा हो जाता है और लहू या कम-से-कम ब्याज की माँग करता है। हम चाहते हैं कि न्याय का तराजू संतुलित हो जाए। हम चाहते हैं कि वह भी उसी पीड़ा को महसूस करे, जिसे हम महसूस कर रहे हैं।

हमारे मन में न्याय का अर्थ केवल हिसाब बराबर करना हो जाता है। यदि वे भुगतान नहीं करते, तो हमें लगता है कि हम हार गए हैं। परन्तु न्याय की यह “तीव्र लालसा” प्रायः केवल घमण्ड का मुखौटा होती है। हमें इस बात से ठेस पहुँचती है कि उन्होंने हमारी सहायता को इतना मूल्यवान नहीं समझा कि हमें लौटाने वाले पैसे को अपनी प्राथमिकता में रखते। हमें इस बात से ठेस पहुँचती है कि उन्होंने हमारे सम्बन्ध के “नियमों” को तोड़ दिया है। इसलिए हम स्वयं को पूरे संसार का न्यायाधीश के रूप में नियुक्त कर लेते हैं हम अपनी मानसिक शक्ति इस बात पर लगाने लगते हैं कि वे अपने धन को कैसे खर्च कर रहे हैं, उनके जीवन-व्यवहार का न्याय करें, और उस क्षण की प्रतीक्षा करें जब वे अन्ततः “ठोकर खाएँ”, ताकि हमें लगे कि हमारे साथ हुआ अन्याय सही सिद्ध हो गया है।

समस्या यह है कि न्याय का यह रूप वास्तव में कभी भी संतुष्टि नहीं देता है। यदि गैरी का साला पीट कल ही आकर उसे उन पन्द्रह हजार डॉलर की पूरी रकम दे दे, तब भी सम्बन्ध अपने आप ठीक नहीं हो जाएगा। विश्वास पहले से ही टूट चुका है। पाँच वर्षों का मौन पहले ही बीत चुका है। हमारे भीतर का न्यायाधीश ऐसे भुगतान की खोज कर रहा है, जिसे धन दे ही नहीं सकता है। हम उस सम्मान और सुरक्षा की वापसी चाहते हैं, जिसे हमने खो दिया है, और कोई भी धनराशि उन्हें वापस नहीं खरीद सकती है। जब आप किसी व्यक्तिगत उधार के लिए “न्याय” की माँग करते हैं, तो सामान्यतः आप एक ऐसी वस्तु का पीछा कर रहे होते हैं जो वास्तव में अस्तित्व में ही नहीं है। आप एक मानवीय व्यवस्था—या किसी मनुष्य—से अपने प्राण के उस खालीपन को भरने की अपेक्षा कर रहे हैं, जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है।

न चुकाया गया उधार कैसे आपकी शान्ति छीन लेता है और कैसे आपकी भावनाओं को नियंत्रित करने लगता है

हमारे द्वारा मानी जाने वाली सबसे बड़ी झूठी बातों में से एक यह है कि हम उस ऋण के स्वामी हैं। हमें लगता है कि नियंत्रण हमारे हाथ में है, क्योंकि दूसरा व्यक्ति हमारा देनदार है। परन्तु धन को लेकर लम्बे समय तक चलने वाले संघर्ष के दौरान अपने जीवन को देखिए। वास्तव में नियंत्रण किसके हाथ में है?

यदि आप किसी पारिवारिक सभा में उस व्यक्ति को खोजे बिना कमरे में प्रवेश नहीं कर सकते, तो ऋण ही आपका स्वामी है। यदि आप अपने बैंक खाते की शेष राशि को उस व्यक्ति के प्रति क्रोध की झलक के बिना नहीं देख सकते जिसने आपको “धन के मामले में धोखा” है, तो वह ऋण ही आपका स्वामी है। यदि आप अपने जीवनसाथी से अपने भविष्य के विषय में बात करने की अपेक्षा उस व्यक्ति ने “क्या किया” इस विषय में अधिक समय तक बात करते हैं, तो ऋण ही आपका स्वामी है। आप सोचते हैं कि आप उस उधारी-पत्र को पकड़े हुए हैं, परन्तु वास्तव में वही उधारी-पत्र एक ऐसी रस्सी है जिसका दूसरा सिरा उस व्यक्ति के हाथ में है, और वह आपको प्रतिदिन आपकी अपनी कड़वाहट के कीचड़ में घसीट रहा होता है।

ऋण को पकड़े रखना आत्मिक बन्धन का एक रूप है। आपने स्वयं को उसी व्यक्ति के साथ एक कोठरी में बन्द कर लिया है, जिससे आप घृणा करते हैं। आपने अपने आनन्द को उसके व्यवहार से बाँध दिया है। यदि वह आपको वापस चुका देता है, तो आप प्रसन्न हो जाते हैं। यदि वह नहीं चुकाता, तो आप दुःखी रहते हैं। आपने अपने भावनात्मक कुशल-क्षेम की चाबियाँ उस व्यक्ति के हाथों में सौंप दी हैं, जिस पर आपको सबसे कम भरोसा है। यह “टढ़” या “सिद्धान्तों वाला” व्यक्ति होना नहीं है; यह एक बन्दी होना है। सच्चा प्रबन्ध इस बात से जुड़ा हुआ होता है कि हम अपने साधनों और अपने हृदय को स्वामी के कार्य के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकें। यदि आप बीती हुई गलतियों के लेखे-जोखे से जकड़े हुए हैं, तो आप ऐसा नहीं कर सकते। ऋण केवल आपका धन ही नहीं चुराता; वह आपकी वर्तमान में उपस्थित रहने की क्षमता, कृतज्ञ रहने की क्षमता और शान्ति में रहने की क्षमता भी चुरा लेता है।

“आँख के बदले आँख” की भ्रान्ति

हम “आँख के बदले आँख” वाली मानसिकता को पसन्द करते हैं, क्योंकि यह हमें संतुलित लगता है। यह ऐसी गणित जैसी लगता है, जिसे हम समझ सकते हैं। यदि आपने एक आँख ली है, तो आपको एक आँख देनी होगी। यदि आपने दस हज़ार लिए हैं, तो आपको दस हज़ार लौटाने होंगे। परन्तु संसार के तरीके से हिसाब चुकता करने का तरीका वास्तव में कभी भी आपके हृदय के खालीपन को नहीं भरता है। वास्तव में, यह प्रायः केवल दो अन्य लोगों को उत्पन्न करता है।

एक जैविक सच्चाई भी है जिसे हम प्रायः अनदेखा कर देते हैं। जब हमारा मन किसी आर्थिक तनाव को भुलाने का प्रयास करता है, तब भी हमारा शरीर उसे स्मरण रखता है। आप दिन-भर स्वयं से कहते रहते हैं, कि “मैं इस बात से उबर चुका हूँ,” परन्तु जैसे ही आप उस व्यक्ति को देखते हैं, आपकी हृदय गति बढ़ जाती है और आपकी साँसें उथली होने लगती हैं। इसका कारण यह है कि आपका तंत्रिका तंत्र अब भी “लड़ो या भागो” की अवस्था में है, क्योंकि आपके भीतर का युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। “जैसे को तैसे” का भ्रम हमें यह विश्वास दिलाता है कि जैसे ही उधार चुका दिया जाएगा, युद्ध समाप्त हो जाएगा। परन्तु वास्तविकता यह है कि युद्ध के घाव तब भी बने रहते हैं, जब वह पैसा आपके खाते में वापस आ जाता है।

मैंने ऐसे पुरुषों को देखा है, जिनका अन्ततः वह निपटारा हो गया जिसकी वे अपेक्षा कर रहे थे, या वह “क्षमा” भी मिल गई जिसकी वे माँग कर रहे थे। परन्तु उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वे पहले के ही समान भीतर से खालीपन महसूस कर रहे थे। ऐसा क्यों? क्योंकि आत्मिक घाव को धन के लेन-देन से नहीं भरा जा सकता है। आपके हृदय का खालीपन चौदह लाख रुपए जितना गहरा नहीं है; वह उससे कहीं अधिक गहरा है। वह आर्थिक विश्वासघात का घाव है, और विश्वासघात का उपचार केवल हिसाब चुकता कर देने से नहीं हो सकता है।

जब यीशु ने दूसरा गाल फेर देने या एक कोस के स्थान पर दो कोस जाने की बात कही, तब वह हमें लोगों के पैरों तले कुचले जाने का मार्ग नहीं सिखा रहा था। वह हमें स्वतंत्र होने का मार्ग बता रहा था। वह कह रहा था कि बहते हुए लहू को रोकने का एकमात्र उपाय यह है कि युद्ध को ही समाप्त कर दिया जाए। “आँख के बदले आँख” का दृष्टिकोण पीड़ा के इस चक्र को हमेशा तक चलता रहने देता है। परन्तु अनुग्रह—सच्चाई, दृढ़ता और अटल अनुग्रह—इस चक्र को तोड़ देता है। वह यह महसूस करता है कि अपने हृदय को फिर से पाने का एकमात्र मार्ग यह है कि आप यह अपेक्षा करना छोड़ दें कि कोई दूसरा आकर आपके टूटे हुए मन को ठीक करे।

मन की गाँठ का विश्लेषण करना एक जटिल विषय है, परन्तु इसका उपचार सरल है, यद्यपि अत्यन्त कठिन है: फिर भी आपको यह महसूस करना होगा कि जो व्यक्ति आपका ऋणी है, वह आपको कभी इतना नहीं दे सकता कि आप फिर से पूर्ण हो जाएँ। केवल स्वामी ही ऐसा कर सकता है। और जिस क्षण आप अपने साथ गलत करने वाले व्यक्ति को न्याय देने वाले के रूप में देखना बन्द कर देते हैं, उसी क्षण आप उसकी ओर देखना आरम्भ कर सकते हैं जिसने पहले ही आपकी हर आवश्यकता को पूरा कर दिया है। ऐसा करके आप “बुरे व्यक्ति” को जीतने नहीं दे रहे हैं; वरन् आप यह निर्णय ले रहे हैं कि अब आप हारते रहना बन्द कर देंगे।

2

खरबों रुपए का ऋण

मैं जानता हूँ कि उस समय कैसा लगता है जब आप हिसाब-किताब की उस तालिका या उस पुरानी, मुड़ी-तुड़ी उधार की पर्ची को एकटक देख रहे होते हैं। आपके लिए वे पन्द्रह हजार डॉलर (लगभग चौदह लाख रुपये) — या राशि चाहे जितनी भी हो — केवल “मुट्टी भर सिक्के” नहीं लगते हैं। वे आपको अपने जीवन के एक वर्ष के समान लगते हैं। वह आपको उस छुट्टी के समान लगते हैं जिसे आप नहीं बिता पाए, उस घर की मरम्मत के समान लगता है जिसे आपको टालना पड़ा था, या उस आर्थिक सुरक्षा के समान लगता है जिसे बनाने के लिए आपने अपना खून-पसीना एक कर दिया। जब लोग आपसे कहते हैं, कि “बस इसे क्षमा कर दीजिए,” तो आपको ऐसा लगता है मानो वे आपसे यह कह रहे हों कि उस धन का कभी कोई अस्तित्व ही नहीं था। यह आपकी पीड़ा को तुच्छ ठहराने जैसा लगता है। ऐसा लगता है मानो वे आपसे मूर्ख बनने के लिए कह रहे हों।

परन्तु हमें इस हिसाब-किताब को एक अलग दृष्टिकोण से देखना होगा। यदि हम अपने आपको मसीह के अनुयायी कहते हैं, तो हमें इस सच्चाई का सामना करना होगा कि हमारा पूरा जीवन उस ऋण की नींव पर बना है जिसे हम चुका नहीं सकते थे। हम केवल ऐसे लोग नहीं हैं जिनके “कुछ दोषों” को हमारे लेखे-जोखे से मिटा दिया गया है; वरन् हम दिवालिया हो चुके थे, एक अनन्त ऋण का सामना कर रहे थे, और उस एकमात्र ने हमारा पूरा ऋण चुका दिया जिसके पास उस ऋण को चुकाने की सामर्थ्य थी।

क्षमा न करनेवाले दास का दृष्टान्त

मत्ती 18:21-35 में यीशु एक ऐसी कहानी बताता है जिसे सुनकर कलीसिया में हर “उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति” को थोड़ा असहज होना चाहिए। यह कहानी एक ऐसे दास से आरम्भ होती है जिस पर राजा के दस हजार तोड़े का ऋण था। इसे समझने के लिए थोड़ा विचार कीजिए—एक तोड़ा अपने आप में बहुत बड़ी मात्रा के परिश्रम को दर्शाता था; आज की तुलना में इसे प्रायः दशकों की मजदूरी के बराबर बताया जाता है। दस हजार तोड़े इतनी विशाल राशि थी कि उसकी कल्पना करना भी कठिन था—वह खरबों रुपयों के बराबर थी। यह ऐसा ऋण था जिसे सौ जन्मों में भी गणितीय रूप से चुकाना असम्भव था।

वह दास अपने घुटनों के बल गिर जाता है और अधिक समय देने के लिए विनती करता है, यह प्रतिज्ञा करते हुए कि वह सब कुछ चुका देगा। यह एक असम्भव प्रतिज्ञा थी, परन्तु राजा उससे भी अधिक

आश्चर्यजनक कार्य करता है: वह केवल उसे और अधिक समय नहीं देता। परन्तु वह उसका ऋण क्षमा कर देता है। वह लेखा पूरी तरह मिटा देता है। वह दस हजार तोड़ों के ऋण की हानि स्वयं सह लेता है और उस व्यक्ति को स्वतंत्र होकर जाने देता है।

परन्तु फिर वही व्यक्ति बाहर जाता है और अपने एक संगी दास को पाता है जिस पर उसके सौ दीनार का ऋण था—जो लगभग तीन महीने की मजदूरी के बराबर था। यह कोई छोटी राशि नहीं थी, परन्तु जिस खरबों रुपये के ऋण को अभी-अभी क्षमा किया गया था, उसकी तुलना में यह जेब में रखे कुछ सिक्कों के समान थी। उस पर जो दया की गई थी, उसे दिखाने के बजाय, वह उस व्यक्ति का गला पकड़ लेता है और उससे ऋण चुकाने की माँग करता है। जब वह व्यक्ति चुका नहीं पाता, तो वह उसे कारागार में डाल देता है।

जब राजा को इस विषय में पता चलता है, तो वह बहुत अधिक क्रोधित होता है। वह उस दास को “दुष्ट” कहता है और उसे कारागार के अधिकारियों के हाथों में सौंप देता है, जब तक कि वह अपना पूरा ऋण चुका न दे। यीशु इस कहानी को एक ऐसी चेतावनी के साथ समाप्त करता है जो बहुत गहरा प्रभाव डालती है: *“इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा।”*

इस दृष्टान्त की कठिन आज्ञाकारिता उसकी तुलना में छिपी हुई है। यीशु यह नहीं कह रहा है कि सौ दीनार का ऋण महत्वहीन है। परन्तु वह यह कह रहा है कि दस हजार तोड़ों के सामने रखने पर वह कुछ भी नहीं लगता है। जब हम किसी ऋण को क्षमा करने से इनकार करते हैं—और अपने भाई को अपने मन से क्षमा करने से भी इनकार करते हैं—तो हम परमेश्वर से यह कह रहे होते हैं कि हमारे पड़ोसी का छोटा सा ऋण उस अनन्त ऋण से अधिक महत्वपूर्ण है जिसे उसने हमारे लिए क्षमा किया है। हम ऐसा व्यवहार कर रहे होते हैं मानो हम भूल गए हैं कि जब उसने हमें पाया था, तब हम कितने गहरे गड्ढे में थे। हम अपने छोटे-छोटे लेखे-जोखे के “स्वामी” बनने का प्रयास कर रहे हैं, और इस सच्चाई को अनदेखा कर रहे हैं कि हम राजा की बहुतायत पर जीवन जी रहे हैं।

क़ूस ऋण चुकाने के रूप में

क्षमा के विषय में सबसे बड़ी गलतफहमियों में से एक यह विचार है कि परमेश्वर ने हमारे पाप को केवल “अनदेखा” कर दिया है। हम सोचते हैं कि उसने बस अपना हाथ हिलाया और कहा, कि “इसकी चिन्ता मत करो।” परन्तु ऐसा नहीं है। क़ूस की बाइबल आधारित समझ के अनुसार, न्याय का पूरा होना आवश्यक था। ऋण यँ ही हवा में गायब नहीं हो जाता; उसे हमेशा किसी न किसी के द्वारा चुकाया जाना आवश्यक होता है।

जब यीशु क़ूस पर गया, तो वह ऋण के अन्तिम निपटारे को पूरा कर रहा था। कुलुस्सियों 2:13-14, में पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने मसीह के साथ हमें भी जिलाया किया, *“और उसने तुम्हें भी, जो अपने*

अपराधों, और अपने शरीर की खतना रहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया। और विधियों का वह लेख और सहायक नियम जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला; और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।” हर झूठ, घमण्ड का हर कार्य, और हर वह क्षण जब हमने अपने आपको अपना ही परमेश्वर बनाने का प्रयास किया, यह हमारे लेख में एक बहुत बड़ा ऋण था। यीशु ने उस ऋण को अनदेखा नहीं किया; उसने उस ऋण का लेखा अपने ऊपर लिया और अपने जीवन के द्वारा उसका मूल्य चुका दिया, ऐसा जीवन जिसका मूल्य दस हज़ार तोड़ों से भी अनन्त रूप से अधिक था। क्रूस मानव इतिहास का सबसे महँगा कार्य था। इसकी कीमत परमेश्वर के पुत्र को सब कुछ देकर चुकानी पड़ी, ताकि हमें सब कुछ मिल सके।

जब आप किसी ऋण के लिए क्षमा करने का चुनाव करते हैं, तो आप केवल “अच्छा” व्यवहार ही नहीं कर रहे होते हैं। वरन् आप क्रूस का अनुकरण कर रहे होते हैं। आप यह कह रहे होते हैं, कि “इस गलत कार्य की कीमत वास्तविक है, परन्तु मैं इसे स्वयं वहन करूँगा ताकि आपको इसे न चुकाना पड़े।” आप अपनी छोटी सी अदालत की “कानूनी माँगों” को उठाकर क्रूस पर कीलों से ठोक रहे होते हैं। आप अभियोग लगाने वाले की स्थिति से हटकर छुटकारा देने वाले की स्थिति में आ रहे होते हैं। यह वह कार्य है जो आप अपने जीवन में सबसे अधिक मसीह के समान कर सकते हैं, और साथ ही यह सबसे कठिन भी है। इसलिए आप यह केवल मसीह में ही कर सकते हैं।

आर्थिक ऋण को क्षमा करना क्यों महँगा है, परन्तु आत्मिक रूप से आवश्यक है

हम “मुफ्त अनुग्रह” के विषय में बात करना पसन्द करते हैं, परन्तु हमें स्मरण रखना चाहिए कि अनुग्रह केवल अनुग्रह पाने वाले के लिए मुफ्त होता है। परन्तु अनुग्रह करने वाले के लिए अनुग्रह अत्यन्त महँगा होता है।

किसी ऋण को क्षमा करने का अर्थ है कि आप उस हानि को स्वयं सह लेते हैं। इसका अर्थ है कि आप उन चौदह लाख रुपये को देखते हैं और कहते हैं, “मैं यह धन फिर कभी वापस नहीं पाऊँगा, और मैं इसके लिए तैयार हूँ।” आप उस चोट को स्वयं सह लेते हैं ताकि दूसरा व्यक्ति चैन की साँस ले सके। आप यह निर्णय लेते हैं कि वह सम्बन्ध, उस व्यक्ति की आत्मा, और आपकी अपनी शान्ति, आपके बैंक खाते में लिखी संख्याओं से अधिक मूल्यवान हैं। वास्तव में, जब आप अपने मित्र या परिवार के किसी सदस्य को धन उधार देते हैं, तभी अपने मन में ऋण के विषय में ऐसा दृष्टिकोण बनाए रखना अच्छा है।

यही पर हानि के विषय में ईश्वर विज्ञान सम्बन्धी समझ वास्तविक हो जाती है। कलीसिया के बेंचों पर और आराधना के वातावरण में क्षमा के विषय में बाइबल आधारित दृष्टिकोण की बात करना एक बात है; परन्तु जब इसका अर्थ यह हो कि आप वह नया ट्रक नहीं खरीद सकते जिसे आप लेना चाहते थे, तो यह दूसरी बात है। यही सुसमाचार का केन्द्र है। यदि अनुग्रह की आपको कोई कीमत नहीं चुकानी पड़ती, तो सम्भवतः वह अनुग्रह ही नहीं है।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूँ जिन्होंने किसी का ऋण तो “क्षमा” कर दिया, परन्तु अगले दस वर्षों तक यह सुनिश्चित करते रहे कि हर कोई यह जानता रहे कि ऐसा करके वे कितने बड़े “बलिदानी” हैं। यह अनुग्रह नहीं है, और न ही यह अपने भाई को मन से क्षमा करना है। यह तो सामाजिक प्रतिष्ठा के माध्यम से उस ऋण की वसूली करने का एक अलग तरीका है। सच्चा अनुग्रह शान्त होता है। यह उस हानि को स्वयं सह लेने और फिर कभी उसका उल्लेख न करने का निर्णय है। यह दूसरे व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करने का निर्णय है मानो उसने कभी आपका कुछ भी बकाया न रखा हो, ठीक वैसे ही जैसे प्रभु ने हमारे साथ किया है।

कोई ऐसा क्यों करेगा? गैरी पीट को फिर से अपने साथ बैठने के लिए क्यों बुलाएगा? इसलिए नहीं कि पीट इस योग्य है। इसलिए भी नहीं कि चौदह लाख रुपए का कोई महत्व नहीं है। परन्तु इसलिए कि गैरी ने यह महसूस कर लिया है कि वह “दस हजार तोड़े” का ऋणी था, जिसे दूसरा अवसर दिया गया है। जब आप यह महसूस करते हैं कि स्वामी ने आपकी ओर से असीमित हानि स्वयं सह ली है, तब चौदह लाख रुपए की हानि अब किसी लासदी जैसी नहीं लगती है। वह तो केवल “धन्यवाद” कहने का एक छोटा सा माध्यम प्रतीत होती है। तब आपके पास मन से क्षमा करने का एक स्पष्ट कारण होता है।

आप हानि को सह लेते हैं, क्योंकि स्वामी ने आपकी ओर से असीमित हानि स्वयं सह ली है। आप दूसरे व्यक्ति को साँस लेने का अवसर देते हैं, क्योंकि स्वामी ने आपको आपका जीवन फिर से लौटा दिया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप किसी को अपने ऊपर अत्याचार करने दें; वरन् इसका अर्थ यह है कि आप राजा के पुत्र एवं पुत्री हैं। इसका अर्थ यह महसूस करना है कि आपका धन किसी ऐसे बैंक खाते में सुरक्षित नहीं है जिसे किसी बुरे व्यापारिक निर्णय से खाली किया जा सकता है, परन्तु वह ऐसे राज्य में सुरक्षित है जो कभी हिलाया नहीं जा सकता है। सुसमाचार का हिसाब सरल है: आपको बहुत अधिक क्षमा किया गया है, इसलिए थोड़ी क्षमा करना आप भी सह सकते हैं। आइए, वहीं से आरम्भ करें।

3

दया और मूर्खता के बीच का अन्तर

आप क्रूस और ऋणों को रद्द करने की इन सभी बातों को सुनते हैं, तो आपके भीतर एक चेतावनी की घंटी बजने लगती है। आप सोचने लगते हैं कि क्या मसीही होने का अर्थ यह है कि आपको संसार का सबसे आसान लक्ष्य बन जाना चाहिए—ऐसा व्यक्ति जो लोगों को तब तक अपने ऊपर चलते रहने देता है, जब तक कि उसके पास देने के लिए कुछ भी शेष न रह जाए। आपको उस सगे सम्बन्धी का ध्यान आता है जिसके पास हमेशा कोई 'बहुत अच्छा विचार' होता है, लेकिन वह कभी किसी काम में स्थिर नहीं हो पाता। आपको उस मित्र का भी स्मरण होता है जो हमेशा किसी न किसी 'अस्थायी' संकट में फँसा रहता है। आपको चिन्ता होने लगती है कि बाइबल में क्षमा करना कहीं "गलत व्यवहार को बढ़ावा देना" का दूसरा नाम तो नहीं है और परमेश्वर आपको मूर्ख बनने के लिए तो नहीं कह रहा है।

परन्तु हमें यह बात बहुत स्पष्ट रूप से समझनी चाहिए: सुसमाचार यह नहीं कहता कि आप अपना विवेक और समझ द्वार पर ही छोड़ दें। अनुग्रह से भरा हुआ व्यक्ति होने का अर्थ यह नहीं है कि आप बुद्धिमानी से काम लेना छोड़ दें। वास्तव में, यदि आप स्वामी के धन के विश्वासयोग्य प्रबन्धक बनना चाहते हैं, तो आपको दया और मूर्खता के बीच का अन्तर सीखना होगा। यह एक ऐसा कार्य है जो आराधना के रूप में आत्मा को चंगा करता है; जबकि दूसरा केवल साहस की कमी को प्रकट करता है, जो किसी गलत आदत को बढ़ावा देती है।

क्षमा बनाम गलत कार्य को बढ़ावा देना: धोखा खाने के बाद क्या आपको फिर से पैसे उधार देने चाहिए?

मन से की गई क्षमा और किसी जुआरी के हाथ में फिर से सौ-सौ के नोटों की गड्ढी थमा देने के बीच यह बहुत बड़ा अन्तर है। क्षमा करना परमेश्वर के साथ आपके सम्बन्ध से जुड़ा हुआ एक आन्तरिक कार्य है। यह आपके हृदय में उस व्यक्ति के विरुद्ध मन में रखा हुआ हिसाब छोड़ देने का निर्णय है, ताकि कड़वाहट का विष आपको भीतर-ही-भीतर न खाता रहे। यह उस दूसरे व्यक्ति का "गला दबाने" की इच्छा को छोड़ देने का निर्णय है, जैसा कि मत्ती 18:28 में उस दास ने किया था। इस अर्थ में आप हर व्यक्ति को हर बात के लिए क्षमा कर सकते हैं और आपको ऐसा करना भी चाहिए। आप उसकी आत्मा से हिसाब लेने की अपनी माँग को छोड़ देते हैं, क्योंकि मसीह ने भी आपकी आत्मा से हिसाब लेने की अपनी माँग छोड़ दी है।

परन्तु किसी की अनुचित आदतों को बढ़ावा देना एक बाहरी कार्य है, जिसका प्रभाव उस व्यक्ति के भविष्य पर पड़ता है। यदि किसी व्यक्ति की आदत दायित्वहीन, आलसी या धोखा देने की रही है, तो उसके ऋण को “क्षमा” करने का अर्थ यह नहीं है कि आप उसे फिर से पैसे दें। यदि आप बार-बार उसके गलत निर्णयों के परिणामों से उसे बचाते रहते हैं, तो आप उस पर दया नहीं कर रहे होते हैं, वरन् उसकी उन्नति में बाधा बन रहे होते हैं। आप उसे वास्तविकता की उस कठोरता का अनुभव करने से रोक रहे होते हैं, जिसका उपयोग परमेश्वर प्रायः लोगों का मन फिराने अर्थात् पश्चात्ताप करने के लिए करता है।

2 थिस्सलुनीकियों 3:10 में पौलुस बहुत स्पष्ट शब्दों में कहता है, “यदि कोई काम करना नहीं चाहता, तो वह खाने भी न पाए।” यह बात हमारे आज के “भले” बनने की सोच रखने वाले लोगों को कठोर लग सकती है, परन्तु वास्तव में यह प्रेम का ही एक रूप है। यह इस बात को स्वीकार करना है कि काम करना गरिमा की बात है और काम के परिणाम भी शिक्षा देते हैं। यदि आप किसी का ऋण “क्षमा” कर देते हैं और फिर उसी व्यक्ति की उसी बार-बार होने वाली समस्या के लिए तुरन्त अपनी जेब खोल देते हैं, तो आप मसीह का अनुकरण नहीं कर रहे होते हैं। वरन् आप स्वयं को परमेश्वर के समान मानकर ऐसा व्यवहार कर रहे होते हैं, मानो उस व्यक्ति को उस संसार से बचाना चाहते हों जिसे परमेश्वर ने स्वयं उसे प्रशिक्षण देने के लिए बनाया है। इसलिए ऋण को क्षमा कर दीजिए ताकि आप स्वतन्त्र हो जाएँ, परन्तु उसकी अनुचित जीवन-शैली को बढ़ावा देने के लिए पैसा न दें।

आपको उतना ही पैसा क्यों उधार देना चाहिए, यदि वापस न भी मिले तो आप सह सकें

यहाँ एक ऐसी व्यावहारिक समझ की बात है, जो कलीसिया की देखभाल करने वाले चरवाहे के अनुभव से निकली है और किसी भी वित्तीय सलाहकार की सलाह से कहीं अधिक आपको तनाव से बचा सकती है: कभी भी उतना “उधार” न दें, जिसे आप “देने” के लिए तैयार नहीं हैं। कलीसिया में धन के कारण जो सबसे अधिक दुःख और मनमुटाव मैं देखता हूँ, वह उन लोगों में होता है जिन्होंने ऐसा “ऋण” दिया होता है, जिसकी उन्हें वास्तव में वापस लेने की आवश्यकता थी। उन्होंने अपने मिल को अपनी आपातकालीन बचत से दिया था, या परिवार के किसी सदस्य की सहायता करने के लिए स्वयं ऋण लिया था। उन्होंने उसे ऋण कहा, परन्तु वास्तव में वे अपनी ही आर्थिक सुरक्षा को जोखिम में डाल रहे थे। और जब वह पैसा वापस नहीं मिला, तो उन्होंने केवल पैसा ही नहीं खोया; वरन् उन्होंने अपने मन की शान्ति भी खो दी।

यदि आप अपनी भाषा में “ऋण” के स्थान पर “किसी व्यक्ति में निवेश” जैसे शब्द का प्रयोग करने लगे, तो आपका रक्तचाप रातों-रात बदल जाएगा। जब कोई भाई आवश्यकता में आपके पास आता है, तो स्वामी के बही-खाते को देखिए। यदि आपके पास सहायता करने की सामर्थ्य है और आप विश्वास करते हैं कि उसकी आवश्यकता वास्तविक है, तो पैसा दे दीजिए। उससे कहिए, कि “मैं यह तुम्हें उपहार के रूप में दे रहा हूँ। यदि कभी ऐसी स्थिति आए कि तुम इसे वापस कर सको या किसी और की सहायता के लिए इसे आगे दे सको, तो यह अच्छी बात होगी। परन्तु जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, यह पैसा अब गया।” यह

कुछ वैसा ही है जैसे इट्स अ वंडरफुल लाइफ फिल्म में जॉर्ज बेली ने ऋणों को देखा था। यह यीशु की उस शिक्षा के अनुरूप है जिसमें उसने कहा कि दो, और बदले में कुछ पाने की आशा मत रखो, न केवल अपने निकट लोगों से, वरन् अपने शत्रुओं से भी (लूका 6:34-35)।

ऐसा करके, आप उस बकाए ऋण की छाया को पहले ही समाप्त कर देते हैं, इससे पहले कि वह कभी उस सम्बन्ध पर अपना प्रभाव डाले। अब आप उस व्यक्ति की स्थिति में नहीं रहते जिसे कुछ वापस मिलना है; आप केवल ऐसे भाई होते हैं जिसने अपनी वस्तु में से कुछ साझा किया है। आपने उस शक्ति-सम्बन्ध को हटा दिया है, जो मिलों को स्वामी और दास बना देता है। यदि वह व्यक्ति आपको कभी वापस नहीं करता, तो कोई कड़वाहट नहीं होती, क्योंकि कोई ऋण था ही नहीं। और यदि वह वापस कर देता है, तो वह देर से मिलने वाली अपेक्षित वस्तु नहीं, वरन् आनन्दमय आश्चर्य होता है। यही वह “चतुराई” है जिसके बारे में यीशु ने बात की थी। यह सम्बन्ध की रक्षा करने का एक तरीका है, अर्थात् इस बात को अनुमति न देना कि बैंक खाते के कुछ अंक आपके और एक भाई के बीच दूरी पैदा कर दें।

पैसे के विषय में परिवार और मिलों के साथ मसीही सीमाएँ निर्धारित करना

हम प्रायः सीमाओं को ऐसी दीवारों के रूप में देखते हैं, जिन्हें हम लोगों को बाहर रखने के लिए बनाते हैं। परन्तु धन और सम्बन्धों का प्रबन्ध करने वाले एक प्रबन्धक के लिए, सीमा एक ऐसी बाड़ है जो बगीचे को स्वस्थ बनाए रखती है। भविष्य में किसी को ऋण देने या सहायता के किसी निवेदन के लिए “नहीं” कहना, वास्तव में उस व्यक्ति के लिए सबसे अधिक मसीही कार्य हो सकता है, जो आप कर सकते हैं।

यदि आपका कोई भाई अपने जीवन के दायित्वों को संभालने से इनकार करता है, जो आवश्यकताओं के लिए दूसरों का ऋणी होते हुए भी विलासिता की वस्तुओं पर धन खर्च करता है, या आपकी उदारता को बार-बार ऐसे उपयोग किए जाने वाले ऋण के स्रोत के रूप में देखता है, जो उसके आर्थिक तनाव को बढ़ाता है, तो उसे “हाँ” कहना वास्तव में घृणा का कार्य है। आप उसे स्वयं को नष्ट करने में सहायता कर रहे हैं। आप उसके गलत चरित्र को बढ़ावा दे रहे हैं।

सच्चा प्रेम गलत समझे जाने के लिए भी तैयार रहता है। वह इस बात को सहने के लिए तैयार रहता है कि वह व्यक्ति आपसे नाराज हो जाए, क्योंकि आपने उसकी अगली गलती के लिए धन देने से इनकार कर दिया है। सीमाएँ प्रेम का एक कार्य हैं, क्योंकि वे दूसरे व्यक्ति को एक ऊँचे स्तर के जीवन की ओर ले जाती हैं। वे उस व्यक्ति को स्मरण दिलाती हैं कि संसाधन परमेश्वर की ओर से सौंपा गया प्रबन्ध हैं, न कि उसके मिलों से मिलने वाला अधिकार।

नीतिवचन 25:28 कहता है, “जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह घेराव करके तोड़ दी गई हो।” यदि आपके पास सीमाएँ निर्धारित करने का साहस नहीं है, तो आप बिना दीवारों वाले नगर के समान हैं। जहाँ हर कोई आपके जीवन में आ-जा सकेगा, और अन्त में आपके पास

उन लोगों के लिए भी कुछ शेष नहीं रहेगा, जिनकी सहायता करने के लिए परमेश्वर ने वास्तव में आपको बुलाया है—जैसे आपका अपना परिवार, आपकी कलीसिया और वे लोग जो सचमुच सहायता के योग्य हैं।

इस बिखरे हुए संसार में बुद्धिमानी के साथ प्रबन्ध करने का अर्थ यह महसूस करना है कि आप हर किसी को बचा नहीं सकते, और न ही आपकी चेक-बुक के द्वारा उन्हें बचाया जा सकता है। आप एक प्रबन्धक हैं, स्वामी नहीं हैं। आपका कार्य यह है कि स्वामी के संसाधनों का वहाँ उपयोग करें, जहाँ वे उसके राज्य के लिए सबसे अधिक भलाई कर सकें। कभी-कभी इसका अर्थ यह होता है कि दया दिखाते हुए किसी का ऋण पूरी रीति से समाप्त कर देना। दूसरी ओर, कभी-कभी इसका अर्थ होता है कि दृढ़ता के साथ “नहीं” कहना, जो किसी व्यक्ति को अपने हाथों की ओर देखने और काम करने के लिए विवश कर दे।

दयालु न समझे जाने के भय में आकर मूर्खतापूर्ण निर्णय मत लीजिए। और न ही ठगे जाने के भय में आकर अपने जीवन को कठोर और हर समय सतर्क रहने वाला बना लीजिए। इन दोनों के बीच उस संतुलन को अपनाइए जिसमें आपका हाथ खुला रहे—जब पवित्र आत्मा प्रेरित करे, तब उदारता से देने के लिए तैयार रहे; परन्तु जब बुद्धि दृढ़ रहने की माँग करे, तब अपनी सीमा पर अटल भी रहे। आप किसी के पैरो तले रौंदे जाने वाले व्यक्ति नहीं हैं; आप तो बाइबल आधारित प्रबन्ध के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करने वाले एक प्रबन्धक हैं। और एक प्रबन्धक की पहली निष्ठा उस व्यक्ति के प्रति नहीं होती जो उससे उधार माँग रहा है, वरन् अपने स्वामी के प्रति होती है।

4

मनमुटाव दूर करने के व्यावहारिक कदम

मैं जानता हूँ कि पिछले कुछ सप्ताहों से—या शायद कई वर्षों से—आप इस बातचीत को अपने मन में बार-बार दोहराते रहे होंगे, चाहे काम पर जाते समय गाड़ी चला रहे हों या रात को सोने का प्रयास कर रहे हों। आपने मन ही मन "कठोर प्रेम" वाली बात, "मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँ, परन्तु निराश हूँ" और यह बात भी कि, "मेरा पैसा लौटा दो, नहीं तो परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहो" कई बार ऐसी बात दोहराई होगी। परन्तु आप अब तक इस बातचीत से इसलिए बचते आ रहे हैं, क्योंकि इनमें से कोई भी बात आपके मन की शान्ति से उत्पन्न होती हुई नहीं लगती है। आपको डर है कि यदि आपने मुँह खोला, तो आप एक कठोर वसूली करने वाले व्यक्ति जैसे लगेंगे, या फिर ऐसे व्यक्ति लगेंगे, जिसे हर कोई आसानी से दबा सकता है।

परन्तु यदि हमें मनमुटाव दूर करना है, तो हमें मन ही मन उस बातचीत का बार-बार अभ्यास करना बन्द करना होगा और सचमुच उस व्यक्ति के पास जाना होगा। इस बिखरे हुए संसार में चुप्पी ही वह स्थान है, जहाँ ऋण का काला बादल सबसे अधिक विनाश करता है। वह खाली स्थानों को मनगढ़ंत धारणाओं और कड़वाहट से भर देता है। यदि आप ऋण की इस शक्ति को तोड़ना चाहते हैं, तो आपको अपने जूते थोड़े मैले करने के लिए तैयार होना पड़ेगा; अर्थात् उस बातचीत को करने का साहस करना होगा, जिससे आप इतने समय से डरते आ रहे हैं।

जिस व्यक्ति पर आपका पैसा बकाया है, उससे सम्बन्ध बिगाड़े बिना कैसे बात करें

सबसे पहले आपको अपनी मनोवृत्ति को जाँचना होगा। यदि आप इस मुलाकात में लड़ाई करने के उद्देश्य से जाते हैं, तो आपको लड़ाई ही मिलेगी। यदि आप उन्हें लज्जित करने के उद्देश्य से जाते हैं, तो वे और अधिक अपने खोल में सिमट जाएँगे। उद्देश्य यह नहीं है कि उनसे उनकी गलती के लिए अंगीकार करवाएँ या उनसे चेक प्राप्त करें; वरन् उद्देश्य यह है कि आप अपने भाई को फिर से वापस पा लें।

जब आप उस व्यक्ति से बात करें जिस पर आपका पैसा बकाया है, तो सबसे पहले उस स्पष्ट बात को स्वीकार करें, जिसे दोनों जानते हैं परन्तु कोई कह नहीं रहा है। पैतालीस मिनट तक मौसम की बातें करके वास्तविक विषय से बचते न रहें। सीधे कह दें: “सुनो, मैं जानता हूँ कि पैसों के कारण हमारे बीच कुछ मनमुटाव हो गया है। मैंने इसे महसूस किया है, और मुझे विश्वास है कि आपने भी महसूस किया होगा। परन्तु मैं हमारी मित्रता को उस ऋण से अधिक मूल्यवान समझता हूँ, और मैं इस विषय में बात करना चाहता हूँ कि हम इससे आगे कैसे बढ़ सकते हैं।”

ध्यान दीजिए कि आप यहाँ क्या कर रहे हैं। आप किसी पैसे की वसूली करने वाले व्यक्ति के समान बात नहीं कर रहे हैं; वरन् आप ऐसे व्यक्ति के समान बात कर रहे हैं जो उस सम्बन्ध के उत्तरदायित्व और मूल्य को समझता है। आप यह प्रकट कर रहे हैं कि आप उस धन से अधिक उस सम्बन्ध को मूल्यवान समझते हैं। और इस विषय को सबसे पहले उठाकर आप “लज्जा” को इस परिस्थिति से दूर कर रहे होते हैं। नीतिवचन 15:1 कहता है कि कोमल उत्तर क्रोध को शान्त कर देता है। इस परिस्थिति का सामना एक “कोमल” और ईमानदार मनोवृत्ति से करके, आप उनके लिए यह सुरक्षित कर रहे हैं कि वे झूठ बोलना या बातें छिपाना बन्द कर दें। आप उन्हें यह अवसर दे रहे हैं कि वे ईमानदारी से बता सकें कि उन्होंने आपको अभी तक पैसा क्यों वापस नहीं किया है, और आप स्वयं को अन्ततः चैन की साँस लेने का अवसर दे रहे होते हैं।

क्या आपको भुगतान की योजना बनानी चाहिए या ऋण को पूर्ण रीति से क्षमा कर देना चाहिए?

जब आप बातचीत आरम्भ करें, तो आपको यह निर्णय लेना होगा कि इस विशेष परिस्थिति में दया वास्तव में कैसी दिखाई देती है। यह ऐसी स्थिति नहीं है कि सभी के लिए एक ही उपाय लागू किया जाए। कभी-कभी सबसे दयालु कार्य जो आप कर सकते हैं, वह भुगतान की एक योजना बनाना है। यह उस व्यक्ति के लिए है जो वास्तव में आपका पैसा लौटाना चाहता है, परन्तु बड़ी धनराशि के कारण दबाव में है। उस राशि को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट दें—जैसे प्रति महीने पचास रुपए—इस प्रकार आप उसकी गरिमा को फिर से प्राप्त करने में उसकी सहायता कर रहे हैं। आप उसे कार्य को अन्त तक पूरा करते रहने की “दृढ़ता” सिखा रहे हैं।

अन्य समयों में, दया का अर्थ यह होता है कि उस लिखित समझौते को दराज से निकालकर उनकी आँखों के सामने जला देना। यह उन “दस हजार तोड़े” वाली परिस्थिति के समान है—वे परिस्थितियाँ जिसमें आप जानते हैं कि वे आपका ऋण कभी वापस नहीं चुका सकते, और वह ऋण एक ऐसे बोझ के समान है जो उन्हें डुबो रहा है। आप उनकी ओर देखकर कहते हैं, कि “मैं इसे क्षमा कर रहा हूँ। आपको मेरा एक भी पैसा नहीं देना है। चलिए, अब से यह ऋण रहा ही नहीं; फिर कभी इसके विषय में बात ही नहीं करेंगे।

आप कैसे जानेंगे कि इनमें से कौन सा मार्ग चुनना है? आप बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं और उनके हृदय को देखते हैं। याकूब 1:5 में हमें बताया गया है कि यदि हममें बुद्धि की घटी हो, तो हमें परमेश्वर से माँगना

चाहिए, जो सब को उदारता से देता है। यदि वह व्यक्ति पश्चातापी है और प्रयास कर रहा है, तो भुगतान की एक योजना बनाना प्रबन्ध का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है। यदि वह व्यक्ति कुचला हुआ और टूटा हुआ है, तो पूरा ऋण छोड़ देना शायद आपके द्वारा किया गया सबसे अधिक मसीह-समान कार्य हो सकता है। उद्देश्य यह नहीं है कि आपका धन आपको वापस मिल जाए; वरन् यह है कि आप वह करें जो उनकी आत्मा और आपकी शान्ति के लिए सबसे अच्छा है।

जब आपका ऋणी व्यक्ति आपसे बचने लगे तो क्या करें

परन्तु उस व्यक्ति के विषय में क्या, जो आपसे बात तक नहीं करना चाहता? उस पीट के विषय में क्या कहें, जिसने आपको फोन करना बन्द कर दिया है और लगभग आपके जीवन से गायब हो गया है? या इससे भी बुरा, उस व्यक्ति के विषय में क्या कहें, जो यह नहीं मानता कि उसने कुछ गलत किया है और स्पष्ट रूप से आपको धोखा देने के बाद भी क्षमा नहीं माँगता? इस स्थिति में, वह मिला से अधिक शत्रु के समान दिखाई देता है।

यह मन की गाँठ के विश्लेषण का सबसे कठिन भाग है। हमें लगता है कि जब तक वे अपनी गलती को स्वीकार नहीं करते, तब तक हम क्षमा नहीं कर सकते। हम “मैं क्षमा करता हूँ” कहने से पहले उनसे “मुझे क्षमा करें” सुनना चाहते हैं। परन्तु यदि आप उनके क्षमा माँगने की प्रतीक्षा करते रहते हैं, तो अब भी आप अपने जीवन की चाबी उनके हाथों में दे रहे हैं। आप उनकी जिद को अपने आत्मिक स्वास्थ्य को नियंत्रित करने दे रहे हैं।

अपने हित के लिए ऋण को क्षमा करने का अर्थ है, कि उसे अपने हृदय में छोड़ देना, भले ही वे कभी धन्यवाद न दें। इसका अर्थ है कि आप स्वामी के साथ बैठकर कहते हैं, कि “हे प्रभु, वे बातचीत करने के लिए तैयार नहीं हैं। वे मुझे मेरा पैसा वापस चुकाने वाले नहीं हैं और न ही वे यह कहने वाले हैं कि उन्हें खेद है। परन्तु मैं यह ऋण आपको सौंप रहा हूँ। मैं उन पर अपने अधिकार का दावा छोड़ रहा हूँ, क्योंकि अब मैं उनसे बैधा हुआ नहीं रहना चाहता हूँ।”

आपको स्वतंत्र होने के लिए उनकी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मरकुस 11:25 में यीशु हमें सिखाता है कि “जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो” तो क्षमा करो। वह यह नहीं कहता, कि “जब वे आकर इसके लिए माँगें, तब क्षमा करो।” वह आपके और परमेश्वर के बीच होने वाली एक आंतरिक स्वतंत्रता की बात कर रहा है। आप अपने मन में उस ऋण-पत्र को जला देते हैं। आप अपने ही मन में चल रहे “कड़वाहट के हिसाब-किताब” को रोक देते हैं। आप यह निर्णय लेते हैं कि आप उनके गायब हो जाने के कारण स्वयं को पीड़ित नहीं समझेंगे। आप आगे बढ़ जाते हैं, इसलिए नहीं कि वे इसके योग्य हैं, परन्तु इसलिए कि आप ऐसे हृदय के प्रबन्धक हैं, जो उन वस्तुओं से कहीं उत्तम कार्यों के लिए बनाया गया है जो पहले ही खो चुकी हैं। और आप ऐसा इस बात को समझते हुए करते हैं कि यीशु ने अपने अनुयायियों से

अपने शत्रुओं से प्रेम करने के लिए कहा है। तो फिर हमें अपने ऋण चुकाने वालों से कितना अधिक प्रेम करना चाहिए?

आर्थिक संघर्ष के बाद क्षमा किस प्रकार से शान्ति लाती है

जब आप अन्ततः ये कदम उठाते हैं—चाहे वह कठिन बातचीत हो, भुगतान की योजना हो, या भीतर से उसे छोड़ देना हो—तो आपके जीवन में परिवर्तन आने लगता है। वह अनकहा बोझ अपना प्रभाव खोने लगता है, क्योंकि आप उसे ज्योति में ले आए हैं। आप उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित होना छोड़ देते हैं, जिसकी पहचान इस बात से होती है कि उसने क्या खोया है, और ऐसे व्यक्ति बनना आरम्भ करते हैं जिसकी पहचान इस बात से होती है कि उसे क्या दिया गया है।

यह सुव्यवस्थित नहीं होगा, और पूरी रीति से मानवीय दृष्टि से यह अब भी “अन्यायपूर्ण” लग सकता है। परन्तु स्मरण रखें, कि उद्देश्य कभी भी संसार के तराजू को संतुलित करना नहीं था। उद्देश्य उस शान्ति में चलना था जो संसार ने नहीं दी और न ही छीन सकता है। आप उस वातावरण को साफ कर रहे हैं ताकि आप अन्ततः फिर से उस मेज पर बैठ सकें—भले ही दूसरी कुर्सी अब भी खाली है। आपने अपनी ओर से जो करना था, वह कर दिया है; परन्तु आपने नहीं, वरन् आप में मसीह ने किया है। आप स्वामी के अनुग्रह के एक विश्वासयोग्य प्रबन्धक रहे हैं। और यह ऐसी विजय है जिसकी तुलना कोई भी बैंक खाता कभी नहीं कर सकता है। आइए, यहीं से आरम्भ करते हैं।

5

निर्मल आत्मा का धन

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनके बैंक में लाखों रुपए हैं, फिर भी वे हमेशा अप्रसन्न चेहरे के साथ घूमते रहते हैं, उनके कंधे ऐसे झुके रहते हैं मानो वे संसार का सारा बोझ उठा रहे हों। और मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिनकी जीवन भर की जमा पूँजी आर्थिक विश्वासघात के द्वारा छीन ली गई, फिर भी उनकी आँखों में ऐसी चमक होती है कि आपको आश्चर्य होता है कि क्या वे कोई ऐसा रहस्य जानते हैं जिसे संसार के शेष लोग भूल चुके हैं। अन्तर उनकी कुल सम्पत्ति में नहीं है; परन्तु अन्तर उनकी आत्मा की दशा में है। जब आप मन में किसी के प्रति बैर-भाव रखते हैं, तो आप आर्थिक कड़वाहट के ऐसे ऋण को उठाए हुए होते हैं जिसे आप वास्तव में कभी चुका ही नहीं सकते हैं। परन्तु जब आप मन में रखे लेखे-जोखे को मिटा देते हैं, तब आप महसूस करते हैं कि निर्मल आत्मा एक प्रकार का धन है, जिसे बाजार की कोई भी गिरावट नहीं छू सकती है।

अपने बकाया धन को छोड़ देने की स्वतन्त्रता

जब आप लेनदार बने रहना छोड़ देते हैं, तब शारीरिक राहत मिलती है। जब गैरी ने अन्ततः पीट को “चौदह लाख रुपए की हानि” के रूप में देखना बन्द कर दिया और तब उसने उसे एक भाई के रूप में देखना आरम्भ किया, तो उसके वास्तविक शरीर में भी कुछ परिवर्तन आया। उसके जबड़े का तनाव ढीला पड़ गया। उसने हर कमरे में किसी शलु को ढूँढ़ना छोड़ दिया और मिल बनने के अवसरों को खोजने लगा।

जब आप लेनदार होते हैं, तो आप सदैव चौकन्ने रहते हैं। आप हमेशा गणना करते रहते हैं, हमेशा संदेह करते हैं और हमेशा अपन बचाव करते रहते हैं। परन्तु जब आप उस ऋण को छोड़ देते हैं, तो आप न्यायालय से बाहर निकलकर फिर से परिवार में लौट आते हैं। आप उस राज्य के लिए, जो मिट जाने वाला है, बिल वसूलने वाले नहीं रहते; वरन् उस राज्य में भाई बन जाते हैं जो अनन्त है। खाली बही-खाता हानि का चिन्ह नहीं है; वरन् यह स्वतन्त्रता का चिन्ह है। इसका अर्थ है कि अब आप दूसरों की असफलताओं से नहीं बँधे हुए हैं। आपने वह बिल स्वामी के हाथ में सौंप दिया है और आप उस मेज से उठकर चले गए हैं। ऐसी आत्मिक राहत उस ब्याज से भी अधिक मूल्यवान है जिसे आप वसूल कर सकते थे।

ऋण क्षमा करना क्यों आर्थिक हानि नहीं, वरन् अनन्त प्रतिफल का निर्माण करता है

“पंद्रह हज़ार”, “दस हज़ार” या “पचास रुपए” पर अपना ध्यान अटका लेना बहुत आसान है। ये संख्याएँ हमें बहुत वास्तविक लगती हैं, क्योंकि हम इन्हें किसी स्क्रीन या कागज़ के टुकड़े पर देख सकते हैं। परन्तु बाइबल हमें बताती है कि अन्ततः ये वस्तुएँ कीड़ों के द्वारा खाए जाने और जंग लगने वाली हैं। ये अस्थायी संसार में अस्थायी संपत्तियाँ हैं।

जब आप मसीह की आज्ञाकारिता के कारण किसी ऋण को क्षमा करने का चुनाव करते हैं, तो आप एक दिव्य विनिमय कर रहे होते हैं। आप पृथ्वी पर होने वाली एक अस्थायी हानि को लेकर उसे उस अनन्त “महिमा के बहुत बड़े भार” में बदल देते हैं, जिसे पौलुस 2 कुरिन्थियों 4:17 में कहता है। आप अपना ध्यान उस वस्तु से, जिसे आपने खोया है, हटाकर उस वस्तु की ओर लगाते हैं जिसे आपने अपनी विश्वासयोग्यता के द्वारा प्राप्त किया है। यह विश्वासयोग्यता उस व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप का फल है जो प्रभु में है।

जब भी आप “बदला लेने” के स्थान पर अनुग्रह को चुनते हैं, तो आप ऐसे स्थान में धन जमा कर रहे होते हैं जहाँ न कोई व्यवसाय बंद हो सकता है और न कोई बहनोई भुगतान करने में चूक कर सकता है। आप अपने स्वयं के चरित्र, अपनी शान्ति और नई यरूशलेम में अपने प्रतिफल में निवेश कर रहे होते हैं। आप केवल तब ही आनन्दित नहीं होते जब परिस्थितियाँ अच्छी होती हैं, वरन् अपने दुःखों में भी आनन्दित होते हैं। और जब आप स्वामी के सामने खड़े होंगे, तो वह आपसे यह नहीं पूछेगा कि आपने कितना ऋण सफलतापूर्वक वसूल किए। वह यह देखेगा कि उस संघर्ष के समय आपके भीतर उसका कितना स्वभाव बना रहा। आज्ञाकारिता ही एकमात्र ऐसा निवेश है जिसका प्रतिफल निश्चित है, और वह प्रतिफल अंकों में नहीं, वरन् आनन्द में मापा जाता है।

कैसे बहाल किए गए सम्बन्ध धन से अधिक मूल्यवान होते हैं

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि गैरी की कहानी का अन्त कैसे हुआ। यह रातों-रात नहीं हुआ, और न ही यह आसान था। परन्तु अपने मन में उस “समझौते को जला देने” का निर्णय लेने के लगभग एक वर्ष बाद, उसने अन्ततः पीट को एक साधारण संदेश भेजा: “अरे, मुझे तुम्हारी कमी महसूस हो रही है। धन्यवाद देने का समय आने वाला है, और तुम्हारी कुर्सी अभी भी वहीं है। पैसे मायने नहीं रखते। आओ, हम बस परिवार बने रहें।”

पीट वहाँ आया। उसके पास न तो कोई चेक था और न ही कोई अच्छा बहाना। परन्तु उसके पास पश्चाताप से भरा हुआ हृदय और बहुत सारे आँसू थे। वे दोनों उस मेज़ पर बैठे और टर्की खाया, और वर्षों में पहली बार उस कमरे में ठण्डापन महसूस नहीं हो रहा था। गैरी ने बाद में मुझे बताया कि जब उसने पीट को परिवार के अन्य लोगों के साथ हँसते हुए देखा, तो उसे एहसास हुआ कि चौदह लाख रुपए उसके आनन्द की वापसी के लिए चुकाई गई एक छोटी सी कीमत थी। उसे अपना भाई वापस मिल गया था। उसे अपनी शान्ति वापस मिल गई थी।

यह निर्मल मन की वह समृद्धि है। इसका अर्थ खुले हाथ और खुले हृदय से संसार को देखना और यह जानना है कि आपकी सच्ची विरासत उस शान्ति के राजकुमार के पास सुरक्षित है, जिसने उसका पूरा मूल्य चुका दिया है। संघर्ष के कारण आपके पास कुछ घावों के निशान हो सकते हैं, परन्तु वे निशान आपको स्मरण दिलाते हैं कि आपने इस बिखरे हुए संसार की कठिन भूमि पर चलकर यात्रा की है और दूसरी ओर अपनी आत्मा को सुरक्षित रखते हुए निकल आए हैं। आइए, हम यह सुनिश्चित करें कि हम उन वस्तुओं में निवेश कर रहे हैं जिन पर जंग नहीं लगता है। आइए, हम यह सुनिश्चित करें कि हम उन वस्तुओं में धनी हों जो वास्तव में महत्व रखती हैं।



निष्कर्ष: जब धन की हानि हो जाए तब परमेश्वर पर अपने पालनहार के रूप में भरोसा रखना

हमने इस यात्रा का आरम्भ गैरी और पीट के साथ किया था, जो एक मेज के चारों ओर बैठे थे। वह मेज वास्तव में जितनी बड़ी थी, उससे कहीं अधिक बड़ी लग रही थी, क्योंकि कमरे में फैला हुआ मौन उसे और भारी बना रहा था। हमने परमेश्वर के राज्य के हिसाब-किताब को देखा है, उन कठिन वार्तालापों के लिए आवश्यक दृढ़ता को देखा है, और उस अनुग्रह के बहुत बड़े मूल्य को भी समझा है जो सस्ता नहीं होता है। परन्तु दिन के अन्त में, प्रबन्ध के इन सभी बाइबल आधारित सिद्धान्तों का सार एक ही मूल प्रश्न में आ जाता है: आप वास्तव में किसे अपने जीवन का पालनहार मानते हैं?

यदि आप विश्वास करते हैं कि आपकी सुरक्षा के एकमात्र निर्माता आप स्वयं हैं, तो खोया हुआ प्रत्येक रुपया आपके अस्तित्व के लिए एक खतरा बन जाता है। प्रत्येक गलत दिया गया ऋण आपकी नींव में एक छेद के समान होता है, जिसे आपको अपने ही हाथों से भरना पड़ता है। परन्तु यदि आप विश्वास करते हैं कि स्वामी का हाथ आपके धन पर है, तो पूरा दृष्टिकोण बदल जाता है। आप समझते हैं कि आप कोई ऐसे स्वामी नहीं हैं जो घबराहट में किसी तिजोरी की रक्षा कर रहे हैं; वरन् आप एक प्रबन्धक हैं, जो उन संसाधनों का प्रबन्ध कर रहे हैं जो किसी और के हैं।

पैसे के संसार में, हानि को केवल हानि ही माना जाता है। यदि आपके खाते से लगभग चौदह लाख रुपए चले जाते हैं और वापस नहीं आते, तो लेखा-जोखा घाटा दिखाता है। परन्तु परमेश्वर के राज्य की व्यवस्था में गणना अधिक जटिल है। हमें यह सीखना होगा कि उस लाभ की गणना कैसे करें, जिसे मैं आत्मा का लाभ कहता हूँ।

यीशु ने मरकुस 8:36 में एक ऐसा प्रश्न पूछा था, जिसे हर कानूनी विवाद और धन से जुड़ी हर कड़वाहट के बीच हमें स्वयं से पूछना चाहिए: "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" सामान्यतः हम इस वचन को इस अर्थ में समझते हैं कि कोई व्यक्ति धन-संपत्ति के लिए अपना उद्धार खो देता है। परन्तु यह बात जीवन के छोटे-छोटे संघर्षों पर भी लागू होती है। यदि आप किसी ऋण को वापस पाने और अपना धन फिर से प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं, परन्तु अन्त में आपका हृदय कठोर, संदेह से और कड़वाहट से भर जाता है, तो क्या आपने वास्तव में कोई लाभ प्राप्त किया है?

चरवाहे के दृष्टिकोण से इसका उत्तर नहीं है। आपने एक अनन्त संपत्ति—मसीह के समान स्वभाव—को एक अस्थायी और कीड़ों के द्वारा नष्ट होने वाली मुद्रा के लिए बदल दिया है। यदि आप धन खो देते हैं, परन्तु इस प्रक्रिया में यह सीखते हैं कि परमेश्वर पर और अधिक गहरा भरोसा कैसे करना है, जैसे आपको क्षमा मिली है वैसे ही क्षमा करना कैसा है, और अपने संसाधनों को खुले हाथ से कैसे संभालना है, तो आपने एक बहुत बड़ा, जीवन को बदल देने वाला लाभ प्राप्त किया है। आपने कागज को सोने में बदल दिया है। आपने अपने बैंक खाते के कुछ अंकों के घट जाने को ऐसी "महिमा का भारीपन" उत्पन्न करने दिया है, जो सदैव बना रहेगा।

हम अपनी मुट्ठियों को इतना कसकर इसलिए बन्द कर लेते हैं, क्योंकि हमारे भीतर भय होता है। हमें इस बात का भय रहता है कि यदि हमें हमारा धन वापस नहीं मिला, तो भविष्य के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन नहीं रहेंगे। हमें लगता है कि "गलत करने वाला व्यक्ति" जीत रहा है और हम ही पीछे रह गए हैं। परन्तु हमें उस प्रभु के स्वभाव को स्मरण रखना चाहिए, जिसकी हम सेवा करते हैं।

फिलिप्पियों 4:19 में पौलुस हमें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा। ध्यान दीजिए, वह यह नहीं कहता कि परमेश्वर आपकी आवश्यकताएँ आपके सारे के द्वारा आपको पैसे लौटाने की क्षमता के अनुसार पूरी करेगा। वह यह भी नहीं कहता कि आपकी सुरक्षा किसी उचित समझौते या सफल व्यापारिक प्रयास पर निर्भर है। आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति राजा के असीम धन से जुड़ी हुई है।

जब आपको अंततः यह महसूस हो जाता है कि परमेश्वर ही आपका पालनहार है, तब आप अपने भरण-पोषण के लिए उस व्यक्ति की ओर देखना छोड़ सकते हैं, जिस पर आपका उधार बकाया है। आपके भविष्य की डोर उसके हाथ में नहीं है; वह स्वामी के हाथ में है। यही एहसास आपको उस समय भी सचमुच शान्त कर सकता है, जब आप किसी ऐसे ऋण को देखते हैं, जिसके वापस मिलने की आशा बहुत कम होती है। यह आपको बचाव की अवस्था से निकलकर विश्राम की अवस्था में आने देता है। आप उदार हो सकते हैं, धैर्य रख सकते हैं, और यहाँ तक कि हानि भी सह सकते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि आपकी आपूर्ति का स्रोत कभी सूखने वाला नहीं है।

आर्थिक चोट को छोड़कर परमेश्वर पर भरोसा करने की प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, जो कुछ हमारे पास है और हम जो कुछ भी हैं, उन सबके प्रभु और स्वामी, मैं अभी उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ जो इस समय यह पढ़ रहा है और जिसका हृदय तेजी से धड़क रहा है। मैं उसके लिए प्रार्थना करता हूँ, जो अब भी किसी कानूनी दस्तावेज़, कड़वी स्मृति, या अपनी हानि के लेख-जोखे को कसकर पकड़े हुए है। प्रभु, इस ऋण का बोझ उनके और उस शान्ति के बीच एक दीवार बन गया है, जिसकी तूने उनसे प्रतिज्ञा की है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें वह सामर्थ्य दे, जो मनुष्य के हृदय के लिए सबसे कठिन काम करने के लिए चाहिए: अपने हाथ खोलकर उस वस्तु को छोड़ देने की सामर्थ्य दे। इसलिए नहीं कि वह धन महत्वहीन है, और न इसलिए कि उनके साथ हुआ अन्याय वास्तविक नहीं था, परन्तु इसलिए कि जो कमी रह जाएगी, उसे पूरा करने के लिए तू ही पर्याप्त है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू उनके भय को अपनी व्यवस्था के प्रति एक दृढ़ और अडिग भरोसे में बदल दे।

उन्हें यह देखने में सहायता कर कि जिस व्यक्ति पर उनका पैसा बकाया है, वह कुचले जाने वाला शत्रु नहीं, वरन् उसी अनुग्रह की आवश्यकता में पड़ा एक मनुष्य है, जिसने हम सब का उद्धार किया है। उनके घरों और उनके मनों पर “बकाया धन की परछाई” के प्रभाव को तोड़ दे। जब वे इस ऋण को छोड़ दें, तब उन्हें एक साफ-सुथरे लेखे का शारीरिक और आत्मिक हलकापन अनुभव होने दे। उन्हें यह जानने दे कि बहाल हुए सम्बन्ध का आनन्द और शान्त मन उस चाँदी से हजार गुना अधिक मूल्यवान है, जिसके पीछे वे अब तक भागते रहे हैं। उन्हें फिर से शान्ति के राजकुमार की ओर लौटा दे, जिसके नाम से हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।



डॉ. रिचर्ड जॉन परहार्ड, कीव थियोलॉजिकल सेमिनरी में सन् 2003 से बाइबल और थियोलॉजी के प्रोफेसर (आचार्य) रहते हुए, वाइस प्रेसिडेंट (उपाध्यक्ष) और एकेडमिक डीन (शैक्षणिक अध्यक्ष) के तौर पर काम करते हैं। उन्होंने बैपटिस्ट बाइबल सेमिनरी से सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. (मैग्रा कम लॉड) और डालस थियोलॉजिकल सेमिनरी से बाइबल की व्याख्या में मास्टर्स इन थियोलॉजी की डिग्री हासिल की है। वे “एंटीओसीन थियोरिया इन द राइटिंग्स ऑफ थियोडोर ऑफ मोपसुएस्तिया एण्ड थियोडोरेट ऑफ सायरस” (Antiochene Theōria in the Writings of Theodore of Mopsuestia and Theodoret of Cyrus) (फोर्ट्रेस प्रेस, 2015) पुस्तक के लेखक भी हैं।

डॉ. लैरी ओट्स, मारनाथा बैपटिस्ट सेमिनरी में लम्बे समय से बाइबल के प्रोफेसर (आचार्य) और पूर्व में सन् 2009-2019 तक अध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने वाटरटाउन, विस्कॉन्सिन में मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी में 40 से अधिक वर्षों तक सेवा की है। मारनाथा बैपटिस्ट यूनिवर्सिटी से ही स्नातक होने के बाद, उन्होंने सिस्टमैटिक थियोलॉजी में पी.एच.डी. की है और वे मौलिकतावाद और बैपटिस्ट इतिहास के विशेषज्ञ हैं।

